India Foundation for the Arts
I F A

इंडिया फ़ाउंडेशन फ़ॉर द आर्ट्स

कला शोध और प्रलेखन

क्या आप शोधकर्ता हैं, या कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविद हैं, और (1) आपको इस सवाल को टटोलने में रुचि है कि कला–संबंधी क्रियाओं और प्रणालियों का निर्माण किस तरह होता है, और उन्हें 'परम्परा' की हैसियत कैसे प्रदान हो जाती है? **या** (2) आपका रुझान समकालीन कलाओं में बदलती प्रणालियों पर शोध करने की तरफ़ है?

कार्यक्षेत्र

हमारा अनुदान कार्यक्रम शोधकर्ताओं और कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविदों को **निम्नलिखित में से एक** पर शोध या डॉक्यूमेंटेशन करने में समर्थन और प्रोत्साहन देने के लिये है:

1) समकालीन कला प्रणालियों में नए प्रयोगों और उभारों को समझने हेतु शोध व प्रलेखन।

शोधकर्ता या कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविद के रूप में आपका समकालीन कला में होने वाली नई गतिविधियों या बदलती पद्धतियों का अध्ययन करने के प्रति आग्रह हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, आपकी रुचि टेक्नोलोजी – टेलिविज़न व इंटरनेट – और समकालीन कला के बीच संपर्क का अध्ययन करने में हो सकती है। हो सकता है आप ऐसी स्थान–विशेष कलाकृति या कलात्मक–प्रक्रिया का अध्ययन करने के इच्छुक हों जो किसी स्थानीय समुदाय या प्राकृतिक परिवेश के साथ विशिष्ट सम्बंध कायम करने से उभरी है। या आपकी उन कलात्मक प्रयोगों और रियाज़ों का अध्ययन करने में दिलचस्पी हो सकती है जो कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविद और दर्शक के बीच विराजी विभाजन–रेखओं को अस्पष्टता में ला छोड़ती हैं।

2) शोध व प्रलेखन जो चिंतनशीलता से कला और कला-सम्बंधी परम्पराओं के निर्माण या उनकी पुनर-रचना को समझने-परखने के लिये हो।

परम्परा का अंग्रेज़ी शब्द ट्रडिशन (*tradition*), लातिन भाषा के शब्द *traditionem* से उभरा है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'सौंपना'। यानि, विद्या/ज्ञान, धारणाओं, मान्यताओं, दंत-कथाओं, प्रथाओं का पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपे जाना। साथ ही, उन सब सोचने और करने के तरीक़ों को भी यहाँ ट्रडिशन/परम्परा कहा जा रहा है, जो बहुत पहले से स्थापित, और लंबे समय से चली आ रही किन्हीं सांस्कृतिक प्रथाओं और प्रणालियों के अनुकूल या अंतर्गत हों।

लेकिन क्योंकि ट्रडिशन/परम्परा ख़ुद से जुड़ी प्रथा-प्रणालियों, अवधारणा-आस्थाओं, मूल्यों और व्यवहार के मानकों के सशक्तिकरण और समर्थन का स्रोत है, तो इसलिये महज़ ज्यों का त्यों धारण कर लिये जोने के बजाए इसका अकसर पुनर- और नव-निर्माण किया जाता रहता है। यहाँ तक कि परम्परागत कहलाई जाने वाली ऐसी कई प्रथाएँ हैं जो हाल ही के समय में समझ-बूझ से आविष्कृत की गई हैं - यानि जिन्हें कई ख़ास कारणों से निर्मित किया गया है, जैसे कि कुछ नया लागू कर पाने, सत्ता-संबंध बरक़रार रखने या प्रचलित सामाजिक वर्गीकरण का औचित्य स्थापित करने के लिये, सामुदायिक सम्बद्धता बनाने-बरक़रार रखने और सामूहिक पहचान सुदृढ़ करने के लिये, या राजनैतिक विचारधाराओं, उद्देश्यों और चाहतों को समर्थन देने के लिये। इसी तरह, कलात्मक परम्पराओं का भी सोच-समझदारी और चौकसी से, उनके लिये नए जनवर्ग और बाज़ार बनाने हेतु, पुनर-विवरण और पुनर-आविष्कार किया जाता रहता है।

इस उपरोक्त प्रसंग के अंतरगत उन शोधकर्ताओं और कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविदों को सहायता मुहैया की जाएगी जिनका रुझान ये अध्ययन करने की तरफ़ है कि परम्पराओं का निर्माण क्यों होता है, या किस तरह से होता है। मसलन, आपका रुझान उन नए मायनों, मान्यताओं और प्रतीकों को समझने-परखने की तरफ़ हो सकता है, जो तब उभर आते हैं जब कोई परम्परा ईजाद की जाती है, या नएपन के साथ परिवर्तित की जाती है। या हो सकता है आपकी रुचि आपको ये समझने की तरफ़ ले जा रही हो, कि इस प्रक्रिया में संभवत: क्या बेदख़ल हो जाता है, या खो जाता है, या छिप जाता है, या दब जाता है। या फिर, ऐसा घटित होने से कलाकार/आर्टिस्ट/कलाविद, कला और उस कला के उत्पादन व अभिग्रहण के बीच सम्बंध किस तरह परिवर्तित हो जाते हैं, आप ये समझने में तत्पर या इसके इच्छुक हो सकते हैं। या आपका आग्रह उन प्रभावों और विचारधाराओं को जाँचने में हो सकता है जो परम्परा के इन गठनों को निर्धारित करते हैं या इनका आधार बनते हैं।

अपने शोध के लिये आप शोध के मौजूदा तरीक़ों का इस्तेमाल कर सकते हैं, या फिर मौजूदा अनुशासन–सम्बंधी पद्धतियों से प्रस्थान करते हुए ऐसे नए सैद्धांतिक साधनों और विधियों की रचना कर सकते हैं जो समकालीन कला प्रणालियों को समझने में ताज़ा योगदान दे सकें।

आवेदन

इस ग्रान्ट प्रोग्राम के बारे में आपके कोई भी सवाल हों, तो हमें बेझिझक लिखें। साथ ही, अगर आप चाहें तो हमें अपना प्रस्ताव भेजने से पहले आप अपने शुरुआती आइडिया पर हम से विमर्श कर सकते हैं। हमारे सुझाव या टिप्पणियों के लिये आप हमसे April 30, 2014 तक अपने **ड्राफ़्ट–प्रस्ताव** पर चर्चा कर सकते हैं।

आपके **फ़ाइनल** आवेदन की हार्ड–कॉपी, यानि काग़ज़ी–प्रति, हमें निम्नलिखित पते पर May 31, 2014 तक मिल जाना चाहिये। किन प्रस्तावों को ग्रान्ट पुरुस्कृत की गई है, इसकी घोषणा July 2014 में की जाएगी।

अपना प्रस्ताव हमें आप अंग्रेज़ी समेत किसी भी भारतीय भाषा में भेज सकते हैं।

आपके प्रस्तावित प्रॉजेक्ट की अवधि कम से कम **12 महीने**, और ज़्यादा से ज़्यादा **18 महीने** की होनी चाहिये।

आप आईएफ़ए से **3 लाख रुपये तक** के सहयोग के लिये आवेदन कर सकते हैं। अगर आप फ़िल्म–निर्माता हैं तो आप **5 लाख रुपये तक** के सहयोग के लिये आवेदन भेज सकते हैं। ग्रान्ट की सम्पूर्ण अवधि के लिये जो बजट आप भेजेंगे, उसमें अपने लिये प्रस्तावित महनताना **1,44,000 रुपये** से ज़्यादा न हो। ध्यान दें, महनताना ग्रान्ट की कुल राशि में ही शामिल है।

आपके प्रस्ताव में निम्नलिखित का विवरण ज़रूर हो:

1) वो **कला–संबंधी क्रिया(एँ) और प्रणाली(याँ)**, या समकालीन कला **प्रणाली(याँ)** क्या हैं, जिन पर शोध और/या प्रलेखन करने के आप इच्छुक हैं;
2) वो **मूल प्रशन** जिनके ज़रिये आप अपने प्रस्तावित प्रॉजेक्ट को शुरू करेंगे;
3) वो **शोध पद्धती** जो अपने अन्वेषण हेतु आप ने चुना है या आप अपनाएँगे,
4) अपने प्रॉजेक्ट की प्रत्याशित **अवधि** और **कार्य योजना**;
5) आपकी परियोजना के प्रस्तावित **नतीजे**।

अपने प्रस्ताव के साथ निम्नलिख ज़रूर संलग्न करें (वरना आपका आवेदन अधूरा समझा जाएगा):

1) कोई **मटीरियल**, जो इससे पहले आपके द्वारा किये काम से हमें अवगत करा सके;
2) आपका **बायोडाटा**;
3) **विस्तृत बजट**, जिससे सफ़ाई से पता चले कि आप फ़ंड का इस्तेमाल किस तरह करेंगे। साथ ही, अगर आपको किसी और संस्था से फ़ंड–प्राप्ति की उम्मीद है, तो इसका भी उल्लेख करें;
4) अपना पता, टेलिफ़ोन व फ़ैक्स नम्बर, और ई–मेल पता;
5) अगर आप किसी संस्था की तरफ़ से आवेदन कर रहे हैं तो उस संस्था के बारे में जानकारी, संस्था की मेमोरान्डम औफ़ असोसियेशन/ट्रस्ट डीड, वार्षिक रिपोर्टें, और पिछले तीन साल के बहीखाते के औडिट का ब्यौरा।

अन्य जानकारी:

1) हमारा फ़ंड केवल परियोजना से जुड़े कार्मिक व्ययों, क्रिया कलापों और यात्रा के लिये होगा। अगर विशेष ज़रूरत हो तो सीमित रूप में उपकरणों व सामग्रियों के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। कृपया सुनिश्चित कर लें कि प्रत्येक बजट श्रेणी परियोजना–संबंधी व्यय के विशेष मद के लिये है।
2) अगर आप किसी संस्था से नहीं जुड़े हैं और व्यक्तिगत रूप में प्रस्ताव भेज रहे हैं तो अकाउंटेंट के लिये अवश्य बजट करें।
3) कृपया संस्थागत मदों, निर्माण व्यय और संरचना संबंधी विकास कार्यों के लिये बजट ना करें।
4) कृपया प्रस्ताव के लेख में अपने परिचय का उल्लेख ना करें।
5) आप अपना ड्राफ़्ट–प्रस्ताव हमें ई–मेल द्वारा भेज सकते हैं, लेकिन फ़ाइनल प्रस्ताव (और उससे संलग्न सहयोगी सामग्री) हमें केवल **हार्ड–कॉपी** में ही भेजें, यानि लिखित या प्रिंट रूप में। ये फ़ाइनल हार्ड कॉपी हमें May 31, 2014 तक पहुँच जानी चाहिये।
6) प्रस्ताव एवं सहयोगी सामग्री आईएफ़ए तक अंतिम तिथि से पहले पहुँचाने की ज़िम्मेदारी आपकी ख़ुद की होगी – **देर से मिलने वाले आवेदनों को स्वीकार नहीं किया जाएगा।**
7) ध्यान रखें कि मुमकिन है कि प्रस्ताव को ठोस रूप से चयनियत करने से पहले हम उसके बारे में अपने मूल्यांकन पर आप से प्रत्युत्तर माँगें।
8) आपके प्रस्ताव का **बाहरी निर्धारिकों से मूल्यांकन कराया जाएगा**, और अनुदान पर आईएफ़ए का निर्णय अंतिम होगा।

योग्यता

अगर आप भारतीय नागरिक या पंजीकृत ग़ैर–लाभकारी भारतीय संगठन हैं, या भारत में कम से कम पाँच साल से रह रहे हैं तो ही आप आवेदन कर सकते हैं।

अपना आवेदन निम्नलिखित पते पर भेजें। साथ ही, कोई भी अन्य जानकारी के लिये संपर्क करें:

Tanveer Ajsi
Programme Executive
India Foundation for the Arts,
'Apurva', Ground floor, No 259,
4th Cross, Raj Mahal Vilas, 2nd Stage, 2nd Block,
Bengaluru 560 094.
Tel: 080 23414681/82
E-mail: **tanveerajsi@indiaifa.org**

अनुरोध करने पर इस अधिसूचना का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होगा और www.indiaifa.org से डाउन्लोड किया जा सकता है।